चतुर किसान

एक गाँव में चार गप्पी रहते थे। गप्पों ही गप्पों में वे लोगों को ठग लिया करते थे। एक दिन गाँव की सराय में पड़ोसी गाँव का एक किसान आकर ठहरा। उसने बहुत कीमती कपड़े पहन रखे थे। गप्पियों ने सोचा क्यों ना किसी तरह इसके कपड़े हड़प लिए जाएँ!

कुछ सोचकर वे सराय में पहुँचे और किसान से इधर-उधर की बातें करने लगे। थोड़ी देर बाद उन्होंने किसान से कहा, "देखो भाई, हम एक दाँव लगाते हैं। यहाँ मौजूद हर व्यक्ति अपना कोई विचित्र अनुभव सुनाएगा। यदि सुनने वालों में से कोई भी उस अनुभव पर अविश्वास प्रकट करे तो उसे सुनाने वाले का गुलाम बनना पड़ेगा।"

किसान ने सबके सामने यह शर्त स्वीकार कर ली। पहले गप्पी ने अपनी गप्प सुनाई – "जब मैं अपनी माँ के पेट में था, तब उसने मेरे पिता से कहा कि वह घर के सामने वाले जामुन के पेड़ के जामुन खाना चाहती है। मेरे पिता ने कहा कि वे उस ऊँचे पेड़ पर चढ़ नहीं पाएँगे। मेरे भाइयों के सामने जब यह बात आई तो उन्होंने भी यही जवाब दिया। मुझे लगा कि माँ की इच्छा पूरी करनी चाहिए। मैं उनके पेट में से निकलकर जामुन के पेड़ पर चढ़ा और सारे फल तोड़ लाया और उन्हें रसोईघर में रख दिया। उसके बाद मैं फिर चुपचाप माँ के पेट में घुस गया।

मेरी माँ ने बहुत सारे जामुन खाए। जो बच गए उन्हें गाँव में बँटवा दिए। लेकिन फिर भी खूब सारे जामुन बच गए। माँ ने वे आँगन में फेंक दिए। उन जामुनों का ढेर इतना बड़ा हो गया कि गली से देखने पर हमारा घर तक दिखाई नहीं देता था।"

यह कहकर पहले गप्पी ने किसान की तरफ देखा। किसान ने उसकी बात पर स्वीकृति से अपना सिर हिला दिया। अब दूसरे गप्पी की बारी थी। उसने कहा, "एक दिन मैं जंगल में सैर करने निकला। वहाँ मुझे इमली का एक पेड़ दिखाई दिया जिसमें सूखी इमलियाँ लटक रही थीं। मुझे बहुत तेज़ भूख लगी थी इसलिए मैं झटपट पेड़ पर चढ़ गया और पेट भर इमली खाई। इससे मेरा पेट भारी हो गया। मुझमें आलस्य भर गया और नीचे उतरना मुश्किल हो गया। मैं गाँव में जाकर एक सीढ़ी उठा लाया। उसे इमली के पेड़ से सटाकर मैं उस सीढ़ी के सहारे नीचे उतर गया।"

इस बार भी किसान ने स्वीकृति में अपना सिर हिला दिया। बाकी गप्पियों ने भी ऐसा ही किया। अब तीसरे गप्पी ने अपनी गप्प यूँ शुरू की, "मैं जब छोटा ही था। एक दिन मुझे खरगोश जैसा एक जानवर दिखाई दिया। मैंने उसका पीछा किया तो वह भागकर झाड़ी में छिप गया। मैं भी उसके पीछे झाड़ी में घुस गया। लेकिन वह खरगोश नहीं बाघ था। जब मुझे निगलने के विचार से उसने मुँह खोला तो मैंने उसे समझाया कि मुझे निगलना सर्वथा अन्याय है क्योंकि मैंने खरगोश तो समझकर उसका पीछा किया था। उसने मेरी बात पर यकीन नहीं किया और मुँह खोलकर मुझ पर झपटने को तैयार हुआ। मैं खीज उठा। मैंने उसके जबड़ों में दायाँ हाथ डालकर उसे चीर डाला। फिर क्या था, बाघ के दो टुकड़े हो गए।"

इस बार भी किसान ने अपना सिर हिला दिया। शेष गप्पियों ने भी वैसा ही किया।

अब चौथे गप्पी ने अपनी गप्प शुरू की, "मैं पिछले वर्ष मछलियों का शिकार करने गया। परन्तु एक भी मछली मेरे हाथ नहीं लगी। बाकी मछुआरों से पूछा तो उन्होंने कहा कि उनके जाल में भी एक भी मछली नहीं फँसी है। नदी के तल में कुछ होगा, यह सोचकर मैं नाव से कूद पड़ा। नदी के तल में पहाड़ जितनी एक बड़ी भारी मछली थी। मैं भूख से परेशान था। मैंने वहीं पर आग जलाई और मछली को भूनकर खा गया। उसके बाद मैं नाव पर सवार होकर लौट आया।"

पहले की तरह किसान ने अपना सिर फिर हिला दिया। विवश होकर शेष गप्पियों को भी अपना सिर हिलाना पड़ा। अब गप्प सुनाने की बारी किसान की थी। उसने गप्प यूँ शुरू की,

दोनों चित्रः तापोशी घोषाल

"कुछ साल पहले मेरे यहाँ कपास का एक खेत था। उसमें एक बहुत बड़ा पौधा था। वह लाल रंग का था। शुरू में उस पौधे की न टहनी थी, न पत्ते। लेकिन बाद में चार टहनियाँ निकल आईं। एक-एक टहनी में, एक-एक फूल लगा। मैंने चारों फूलों को काटा तो उसमें से चार नौजवान निकले। वे नौजवान चूँकि मेरे खेत के फूलों में से निकले थे इसलिए वे मेरे गुलाम थे। मैंने उनसे अपने खेत का काम करवाया। पर वे अव्वल दर्जे के आलसी थे, इसलिए एक दिन मौका पाकर वे भाग निकले। मैं उनकी खोज में घर से निकला। आखिर मैंने उन्हें यहाँ पकड़ लिया। बताऊँ, वे कौन हैं? वे चारों तुम ही हो। अब चुपचाप मेरे साथ खेत पर चलो।"

किसान की यह गप्प सुनकर चारों गप्पियों ने अपने सिर नीचे कर लिए। उनके सामने बड़ी उलझन पैदा हो गई। यदि वे इस गप्प को सच कहते हैं तो उन्हें इस चालाक किसान का गुलाम बनना पड़ेगा और यदि झूठ कहते हैं तो शर्त हार जाने के कारण भी गुलाम बनना पड़ेगा।

"किसान ने उन्हें चुप देखकर कहा, ठीक है तुम लोगों के बदन पर जो कपड़े हैं वे उतारकर मुझे दे दो। मैं तुम लोगों को मुक्त कर दूँगा। चारों गप्पियों को लेने के देने पड़ गए।"

मेयाओं मेयाओं...

हामिद उल्ला अफसर

एक तरफ से चुहिया आई
एक तरफ से दूध मलाई
यह भी खाऊँ वह भी खाऊँ
मेयाओं मेयाओं मेयाओं मेयाओं

चूँ चूँ करती चिड़िया आई
दाने-दाने को ललचाई
इस को आखिर क्यों तरसाऊँ
मेयाओं मेयाओं मेयाओं मेयाओं

मुर्गी के बच्चे हैं सारे
लेकिन मुर्गी ठोंग न मारे
इन पर किधर से नाक लगाऊँ
मेयाओं मेयाओं मेयाओं मेयाओं

रेडियो कोई गीत सुनाए
कोई ग्रामोफोन बजाए
क्यूँ न मैं अपना गाना गाऊँ
मेयाओं मेयाओं मेयाओं मेयाओं

अनुवादः मुहम्मद खलील

माथापच्ची के हल

1. बिजली के झटके देने वाली कुर्सी चुनकर क्योंकि बिजली तो गुल है।
2. एक पेड़ पर 7 व दूसरे पर 5
3. 4 बेटियाँ व 3 बेटे
4. पूरी-पूरी सम्भावना है कि उनके पास एक जोड़ी मोज़े हो क्योंकि हर हाल में दो मोज़े तो एक रंग के होंगे ही।
5. पहले भाग में 12 काले व 4 लाल, दूसरे में 6 काले व 18 लाल और तीसरे में 8 काले व 4 लाल।
6. क्योंकि सिक्के पर लिखा है 200 ईसा पूर्व यानी ईसा से 200 साल पहले। लेकिन किसी को कैसे पता हो सकता है कि 200 साल बाद ईसा होंगे।
7. 11:41 क्योंकि पहली घड़ी व दूसरी घड़ी में 3 घण्टे 3 मिनट, दूसरी व तीसरी घड़ी में 4 घण्टे 4 मिनट व तीसरी व चौथी घड़ी में 5 घण्टे 5 मिनट का अन्तर है।